# सवाल तंत्र का नहीं नीयत का है

अमुक दल या वाद सत्ता में आ जायेगा तो सुख-शान्ति हो सकती है । आज देश के सामने जितनी समस्याएँ है उनमें से तीन चौथाई शासकों की आपा-धापी के कारण उत्पन्न हुई हैं । यदि आस्थाएँ उत्कृष्ट न बनाई जा सकीं तो किसी भी पार्टी का - किसी भी दल का - किसी भी वाद का शासन हो जाये स्थिति बद से बदतर होती चली जायगी । भावनाएँ ऊँची हों तो बदनाम शासन तंत्र तक आदर्श हो सकता है । रामराज्य में उत्कृष्ट शासन ही था जिसकी गरिमा गाते हुए हम थकते नहीं है । दूसरी और आज के पाकिस्तानी प्रजातंत्र और साम्यवादी चीन की करतूतें हम आँखों के सामने देख रहे हैं ।

अमुक धर्म वाले लोगों का शासन हो जाने से संसार में सुख-शान्ति हो सकती है यह सोचना भी व्यर्थ है । योरोप में इस शताब्दी के दोनों महायुद्ध ईसाई धर्मावलम्बियों के बीच ही हुए है । देवता और असुर दोनों हिन्दु धर्मनुयायी थे । इतिहास बताता है कि किसी भी धर्म का लेविल मानवीय श्रेष्टता की गारण्टी नहीं हो सकता । आन्तरिक महानता जीवित हो तो धर्म-सम्प्रदाय का भेद मानवीय प्रेम, सहयोग और शान्ति प्राप्ति में मार्ग में तनिक भी बाधक नहीं हो सकता ।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य